अध्याय : ५

रागांग भैरव एवं पूर्वी का तुलनात्मक अध्ययन

किसी राग एवं रागांग का विश्लेषण अलग अलग पहलूओ को ध्यान मे रखकर किया जा सकता है । उदा. स्वरूप किसी एक राग का अध्ययन करने के लिए विभिन्न प्रकार की बंदिशो का अभ्यास आवश्यक है , यह एक सर्वमान्य मत है । रागांग भैरव और पूर्वी एक दुसरे से भिन्न है, परन्तु इसी भिन्नता मे कुछ समानताओं की खोज करना यह इस अध्याय का उद्देश्य है । रागांग अर्थात राग का मुख्य अंग, इसी के तुलनात्मक अध्ययन से एक अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करना यह शोधार्थी का हेतू है ।

तुलनात्मक अध्ययन की पूर्ति के लिए शोधार्थी द्वार कुछ प्रमुख बिन्दुओ पर विचार किया गया, जो निम्न रूप से है :

१) स्वर साम्यता एवं विभिन्नता

२) प्रस्तुतीकरण एवं रागांग

३) रागो की समानता एवं विभिन्नता

४) कर्नाटक मेल पद्धति एवं थाट पद्धति

५.१ स्वर साम्यता एवं विभिन्नता :

भैरव राग भैरव थाट का आश्रय राग है । इसी भैरव राग मे रागांग भैरव समाहित है । इसी प्रकार पूर्वी थाट का आश्रय राग पूर्वी है , जिसमे पूर्वी रागांग समाहित है। भैरव रागांग कोमल एवं आंदोलित ऋषभ और धैवत से युक्त है, तथा इसमे शुद्ध मध्यम की प्रबलता भी है । पुर्वी रागांग के अंतर्गत भी ऋषभ व धैवत कोमल है तथा शुद्ध मध्यम गौण है । पूर्वी रागांग मे तीव्र मध्यम की प्रबलता है । इन दोनो रागांगो के अंतर्गत गाए जाने वाले रागो का गायन समय अधिकतर प्रातः या सायंकालिन संधिप्रकाश है ।

प्रातःकालिन संधिप्रकाश रागो मे शुद्ध मध्यम का बहुत्व एवं सायंकालिन संधि

प्रकाश रागो मे शुद्ध मध्यम का अल्पत्व दिखाई देता है । गंधार स्वर पर कोमल ऋषभ का कण सायंगेयत्व सिद्ध करता है । पूर्वी रागांग युक्त राग परज मे ऐसा कण प्रयोग नही किया जाता है । भैरव रागांग युक्त प्रातःकालिन राग भैरव की प्रतिकृति पूर्वी रागांग युक्त सायंकालिन राग पूर्वी माना जा सकता है ऐसा शोधार्थी का मत है ।

भैरव रागांग वाचक स्वर संगती ग म रे सा है और पूर्वी मे इसकी प्रतिकृति ग म (रे)ग रे ग रे सा है । समान स्वर होते हुए भी स्वर लगाव, कण प्रयोग, स्वर संगती की अपनी विशिष्ट लय, स्वरो का आंदोलन इत्यादि से भिन्नता का अनुभव होता है । इसी तरह भैरव रागांग वाचक स्वर संगती ग म ध प, ध ध प म प की प्रतिकृति ध नि ध प, ध नि रें नि ध प यह पूर्वी रागांग की स्वर संगती मानी जा सकती है ।

भैरव रागांग व पूर्वी रागांग की स्वर संगतियों का तुलनात्मक अध्ययन निम्न रूप से प्रस्तुत है :-

भैरव रागांग	पूर्वी रागांग
नि़ सा ग म	नि़ सा रे ग
सा ग म प	नि़ रे ग म॑ प
ग म रे सा	ग म॑ (रे)ग रे सा
ग म ध	ग म॑ प
ध ध प म प	ध नि ध प
नि ध सां ध प	ध नि रें नि ध प
ध म प ग म रे सा	ध प म॑ ग म (रे)ग, (रे)ग, रे सा
नि ध सां	म॑ ध सां

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि भैरव रागांग के प्रातःकालिन सवाल का पूर्वी सायंकालिन जवाब है । स्वर संगतियों की विभिन्नता मे भी एक सूक्ष्म समानता दिखाई देती है ऐसा शोधार्थी का मत है ।

५.२ प्रस्तुतीकरण एवं रागांग :

किसी राग को प्रस्तुत करते समय रागांग वाचक स्वर संगतियों का प्रयोग करते हुए अन्य स्वरो के साथ संयोजन किया जाता है । शोधार्थी द्वारा कुछ महान कलाकारो की प्रस्तुतियों मे रागांग भैरव एवं रागांग पूर्वी वाचक स्वर संगतियों को समझने का एक नम्र प्रयास किया है । स्व. पं. कृष्णराव शंकर पंडित द्वारा प्रस्तुत किए गए राग भैरव और उस्ताद फैयाजखां साहब द्वारा प्रस्तुत किये गये राग पूर्वी को सुनकर रागांग प्रयोग समझने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है । रागांग भैरव एवं पूर्वी का प्रस्तुतीकरण मे प्रयोग निम्न रूप से है :-

५.२.१ पंडित कृष्णराव शंकर पंडित - राग भैरव

"कोयल बोले" इस ख्याल की सम मध्यम स्वर पर स्थित है, जो भैरव राग मे मुक्त मध्यम के महत्त्व को स्पष्ट करता है । बंदिश मे ही ग म रे सा और ग म ध प यह रागांग वाचक स्वर संगतियों का प्रयोग किया गया है । आंदोलित ऋषभ एवं धैवत का अद्‌भूत प्रयोग किया गया है । म रे की मींड रागांग भैरव को स्पष्ट करती है । छोटी छोटी तानो की सहायता से राग का एक परिपूर्ण स्वरूप प्रकट हुआ है । लयकारी के अलग अलग प्रकार एवं गमकयुक्त सपटा तानो का विद्‌वत्तापूर्ण प्रयोग किया गया है ।[1]

५.२.२ उस्ताद फैयाजखाँ साहब - राग पूर्वी

प्रारम्भिक आलाप मे नि़ रे ग मं प, मं ग गमपपममग रे ग मं ध मं ग रे सा इस प्रकार रागांग पूर्वी वाचक स्वर संगतियों का प्रयोग स्पष्टरूप से किया गया है । इसमे शुद्ध मध्यम का प्रयोग अल्प रूप से एक विशिष्ट खटके द्वारा चमत्कृति पूर्णरूप से किया गया है । रें नि ध प, मं ग, ग म ग इन स्वर संगतियों द्वारा राग विस्तार किया गया है ।

उस्ताद फैयाजखाँ साहब ने आलाप, बोल बनाव एवं तानो के अद्‌भूत प्रयोग से इस अल्पकालिन प्रस्तुती द्वारा राग का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत किया है ।[2]

1. Youtube - https://youtu.be/kejDrPqGbl
2. Youtube - https://youtu.be/oifHBhvkZmQ

शोधार्थी का मत है कि ग्वालियर एवं आगरा घराने के इन महान कलाकारों के प्रस्तुतीकरण से रागांग प्रयोग पूर्णरूप से स्पष्ट हुआ है । भैरव एवं पूर्वी रागांग की महत्त्वपूर्ण संगतियों का अभ्यास एवं चिन्तन इन महान कलाकारो के गायन को सुनकर करना चाहिए ऐसा शोधार्थी का मानना है । इन दोनो कलाकारो की प्रस्तुतियाँ रागांग के महत्त्व को सिद्ध करती है ।

५.३ रागो की समानता एवं विभिन्नता :

तुलनात्मक अध्ययन के हेतू की पूर्ति के लिये शोधार्थी द्वारा ऐसे कुछ रागो का चयन किया गया है जो भैरव और पूर्वी अंग से गाए जाते है और जिनका नामकरण समानरूप से किया गया है । कुछ राग ऐसे भी प्राप्त है जिसमे एक ही राग का संबंध भैरव और पूर्वी रागांग दोनो से सूक्ष्म रूप से हो सकता है ।

रागो की सूचि इस प्रकार है :

- गौरी (भैरव थाट) एवं गौरी (पूर्वी थाट)
- विभास (भैरव थाट) एवं विभास (पूर्वी थाट)
- परज कालिंगडा

५.३.१ गौरी (भैरव थाट) एवं गौरी (पूर्वी थाट) :

राग गौरी के दो मुख्य प्रकार माने गए है । एक प्रकार को भैरव थाट और दुसरे प्रकार को पूर्वी थाट के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है । भैरव थाट की गौरी मे ऋषभ व धैवत कोमल एवं शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता है । इस राग मे ऋषभ व धैवत का आंदोलित प्रयोग नही होने के कारण भैरव रागांग वाचक स्वर संगतियों का प्रयोग नही किया जाता है । उसी प्रकार पूर्वी थाट की गौरी मे ऋषभ व धैवत कोमल एवं तिव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है ।

शोधार्थी के मतानुसार स्वर साम्यता के आधार पर इन रागो को थाटो के अंतर्गत

वर्गीकृत किया गया है । रागांग वाचक स्वर संगतियों का सीधा प्रयोग दोनो रागो मे नहीवत है । गौरी यह विशेष रूप से श्री का उपांग माना गया है । जिसकी अपनी एक विशेष रागांग वाचक स्वर संगती है ।

गौरी अंग की विशेष रागांग वाचक स्वर संगती, जो दोनो प्रकारो मे प्रयोग की जातीी है, निम्न रूप से है :

सा रे नि़ सा, नि़ ध़ नि़, रेग – सारे – नि़सा, प, मगरेग, पधनि – पध – मप – मगरेग, सारे – नि़सा [1]

५.३.२ विभास (भैरव थाट) एवं विभास (पूर्वी थाट) :

भैरव थाट के विभास मे मध्यम व निषाद वर्ज है, एवं ऋषभ व धैवत कोमल है । इस राग मे भैरव रागांग स्वर संगतियों का प्रयोग नही है । ऋषभ व धैवत का प्रयोग भी आंदोलित नही है । ध ध प यह मुख्य संगती है । संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है – ध ध प, ग प ध प, ग रे सा, सा रे सा, ग प, प, ध, प , सा रे ग प, ध ध प, ग प ध प, ग रे सा, ध ध, प [2]

कोमल ऋषभ एवं धैवत थाट मे इस राग को वर्गीकृत करने का मुख्य कारण है, ऐसा शोधार्थी का मानना है । पूर्वी थाट के विभास मे तीव्र मध्यम का प्रयोग है और ऋषभ धैवत कोमल प्रयुक्त होते है । क्रमिक पुस्तक मालिका मे प्राप्त स्वर विस्तार मे पूर्वी रागांग वाचक कुछ स्वर संगतियों का प्रयोग दिखाई देता है :

उदा. ध नि ध प, रें नि ध प, म॑ ध नि ध प, म॑ ध प

इस राग को स्वर साम्यता एवं रागांग दोनो को आधार मानकर पूर्वी थाट के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, ऐसा शोधार्थी का मत है । राग का संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है :

सा, ध, प, म॑ ध प, प, ग प ग रे सा, सा, रे सा, रे सा, ग प, म॑ ध प, ध सां, ध नि ध प, ग प ध प ग रे सा [3]

1. जोशी, वैजयंती र./रागमंथन/ पृ. १८
2. भातखंडे, विष्णु नारायण/क्रमिक पुस्तक मालिका/पृ. ३९०
3. भातखंडे, विष्णु नारायण/क्रमिक पुस्तक मालिका/पृ. ५२२

५.३.३ परज कालिंगडा :

इस मिश्र कोटी के राग मे दो रागो का मिश्रण है, परज व कालिंगडा । परज पूर्वी थाट का राग है और कालिंगडा भैरव थाट का राग है । भैरव व पूर्वी रागांग वाचक स्वर संगतियों का सीधा प्रयोग इस राग मे नहीं किया जाता है । संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है :

सा, ग म प ध प, म ग म, ग रे ग, मं ग रे सा, मं ध नि - ध - प, म ग म, ग रे ग, मं ग रे सा, मं ध नि, ध नि सां रें सां नि - ध - प, ध मं प, ग म ग रे ग, गमपप मग रेसा [1]

५.४ कर्नाटक मेल पद्धति एवं थाट पद्धति :

कर्नाटक मेल पद्धति और थाट पद्धति मे कुछ समानताएँ दिखाई देती है, जिसका उल्लेख भैरव और पूर्वी रागांग के विश्लेषणात्मक अध्ययन को एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है । इसी कारण से कर्नाटकी मेल और हिन्दूस्तानी थाट अथवा राग की तुलना शोधार्थी द्वारा निम्न तालिका मे प्रस्तुत की है :

मेल क्रमांक	कर्नाटकी मेल	हिन्दूस्तानी थाट अथवा राग
१४	बकुला भरण (सा रे ग म प ध नि सां)	बसंत मुखारी
१५	मायामलवगौल (सा रे ग म प ध नि सां)	भैरव
१६	चक्रवाक (सा रे ग म प ध नि सां)	अहिर भैरव
१७	सूर्यकांत (सा रे ग म प ध नि सां)	---
२७	सरसांगी (सा रे ग म प ध नि सां)	नटभैरव
५०	नामनारायणी (सा रे ग मं प ध नि सां)	---
५१	कामवर्धिनी (सा रे ग मं प ध नि सां)	पूर्वी
५२	रामप्रिय (सा रे ग मं प ध नि सां)	---

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि बसंत मुखारी, भैरव, अहिर भैरव, नट भैरव और पूर्वी के समान ही स्वर सप्तक कर्नाटकी मेल मे भी पाए जाते है ।

1. आठवले, वि.रा./राग वैभव/पृ. १५२

निष्कर्ष :

इस तुलनात्मक अध्ययन से रागांग भैरव और रागांग पूर्वी एक इसरे से भिन्न होते हुए भी कुछ समानताओ पर विचार प्रस्तुत करने का प्रयाग शोधार्थी द्वारा किया गया है।

निष्कर्ष रूप मे प्राप्त कुछ तथ्य इस प्रकार है :

१. रागो के गायन समय और स्वर का संबंध महत्त्वपूर्ण एवं निश्चित है । शुद्ध मध्यम का प्रयोग प्रातः काल और तीव्र मध्यम सायंकालिन संधीप्रकाश का सूचक है ।

२. समान नाम के राग स्वर एवं स्वर लगाव की भिन्नता के कारण अलग अलग थाटो मे वर्गीकृत किए गए है ।

३. राग प्रस्तुतीकरण मे रागांग वाचक स्वर संगतियों का प्रयोग राग स्वरूप की शुद्धता के लिये महत्त्वपूर्ण है ।

४. रागांग भैरव वाचक स्वर संगतियाँ एवं रागांग पूर्वी वाचक स्वर संगतियों मे भिन्नता के साथ साथ सूक्ष्म रूप मे समानता दिखाई देती है ।

५. कर्नाटकी मेल और हिन्दूतानी थाट के नाम अलग अलग होते हुए भी कुछ थाटो मे स्वर साम्यता दिखाई देती है ।